Dabhol CCGT (740 MW- Phase-I)

The project has obtained all the necessary inputs including TEC of CEA as well as financial closure.

Patalganga CCGT (447 MW)

The project has received most of the required clearances/inputs. The major pending milestones are TEC by CEA and financial closure.

Khaperkheda TPP (Units 3&4-500 MW)

This project was proposed to be developed by M/s Ballarpur Industries Limited. The Maharashtra State Electricity Board has since informed that the project shall now be taken up by them.

(d) The Dabhol project (Phase-I) is presently under construction and is expected to commence generation in 1998-99. The commissioning of the other projects would depend on tying up of the pending inputs including financial closure.

बिजली का अपव्यय

287. **श्री राम जेठमलानी**: क्या विद्युत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि देश में पारगम्यता व्यवस्था की सुविधा के अभाव में अनेकों परियोजनाओं में उत्पान कम हो रहा है अथवा बिजली बिना उपयोग के व्यय नष्ट हो रही है,

(ख) यदि हां, तो बिजली के नुकासन के संबंध में सरकार ने वार्षिक मात्रा का क्या आकलन किया है,

(ग) क्या पावर ग्रिड कार्पोरेशन का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया गया है, और

(घ) यदि हां, तो कार्पोरेशन द्वारा अभी तक कौन कौन सी योजनाएं तैयार की गई है और इनके द्वारा कितनी बेकार बिजली का उपयोग संभव है?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा विद्युत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र कुमार भगतराम अलघ): (क) और (ख) विभिन्न विद्युत केन्द्रों में विद्युत का उत्पादन मांग पर निर्भर करता है जो वर्ष के विभिन्न मौसमों के दौरान बदलती रहती है तथा साथ ही समावेशन क्षमता पर निर्भर करता है उच्च वोल्टता वाली पारेषण लाइनों की उपलब्धता तथा उप पारेषण एंव वितरण सुविधाओं पर निर्भर करती है।

सितम्बर, 1997 में विद्युत उत्पादन की अपेक्षा अक्तुबर, 1997 में 2.437 अधिक विद्युत उत्पादन हुआ और अक्तुबर, 1996 में विद्युत उत्पादन की अपेक्षा 5.1% अधिक विद्युत उत्पादन हुआ। अक्तुबर, 1996 और अक्तुबर, 1997 में अखिल भारत ऊर्जा की कमा क्रमश: 87% और 8.1% थी।

पूर्वी क्षेत्र में कम मांग के कारण ताप विद्युत केन्द्रों को बन्द करना पड़ा हालांकि कुछ संघटकों में व्यस्ततम कालीन घंटों के दौरान विद्युत की कमी रही। ऐसा मुख्यत: अपर्याप्त उप-पारेषण एंव वितरण प्रणालियों के कारण कम समावेशन क्षमता की वजह से है। पूर्वी क्षेत्र में उत्पादन को अधिकतम बनाने के लिए आंध्र प्रदेश को 150 मे.वा. म. प्र. को 150/300 मे. वा., असम को 100 मे. वा. तथा उत्तरी क्षेत्र को 120 मे.वा अंतरित करने के लिए पहले ही कदम उठाए जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त उड़ीसा में निर्यात उन्मुख यूनिटों को 130 मे. वा. तथा मणिपुर को 30 मे. वा. का आबंटन के वि. प्रा. द्वारा किया गया है। केरल को 100 मे. वा. विद्युत का अंतरण करने के लिए भी कदम उठाए जाने का प्रस्ताव है।

उत्तरी क्षेत्र में भी, अक्तुबर माह के दौरान मांग कम थी। कम मांग ने उत्पादन स्तर को भी प्रभावित किया है।

(ग) और (घ) उत्पादन क्षमता को अधिकतम बनाने के उद्देश्य से पावरग्रिड ने कई अंत: क्षेत्रीय पारेषण लाइनों को चालू किया है। इनका ब्यौरा निम्नवत है:

1. **विद्यमान (प्रचालनाधीन)**

(i) पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्र के मध्य 500 मे. वा. विन्धयाचल एच. वी. डी. सी. बैक-टू-बैक केन्द्र।

(ii) उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र के मध्य 220 के. वी. वीरपाड़ा-बोंगईगांव

(iii) दक्षिणी क्षेत्र और पश्चिमी क्षेत्र के मध्य रामागुण्डम चन्द्रपुर-400 के. वी. लाईन

(iv) पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र चन्द्रपुर में 1000 मे. वा. एच.वी. डी. सी. बैक-टू-बैक का प्रथम 500 मे. वा. पोल

राष्ट्रीय ग्रिड को सृदृढ़ बनाने तथा अंतः क्षेत्रीय पारेषण प्रणाली को विस्तृत करने के लिए पावरग्रिड निम्नलिखित को आंरभ करने की योजना बना रही है:-

II. **निर्माणाधीन**

(i) पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र चन्द्रपुर में 100 मे. वा. एच.वी.डी.सी बैक-टू-बैक का दूसरा 500 मे. वा. पोल।

(ii) पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों के मध्य गजुवाका में 500 मे.वा. एच.वी.डी.सी बैक-टू-बैक

(iii) उत्तर-पूर्वी और पूर्वी क्षेत्र के मध्य बोंगईगांव और मालदा के मध्य 400 के. वी. ।

III. **विचाराधीन**

(i) पूर्वी और उत्तरी क्षेत्र के मध्य बिहार शरीफ से रिहन्द के मध्य सासाराम में 500 मे. वा.

IV. पावरग्रिड द्वारा किए गए अध्ययन निम्नलिखित अतिरिक्त प्रमुख पारेषण लिंकों की आवश्यकता को सुझाते हैं:-

(i) रायपुर (पश्चिमी क्षेत्र) से राउरकेला (पूर्वी क्षेत्र) तक 400 के. वी. एस. सी.।

(ii) तलचेर-2 पारेषण प्रणाली के एक हिस्से के रूप में पूर्वी क्षेत्र में तलचेर से बंगलौर में दक्षिणी क्षेत्र के मध्य 3000 मे. वा. एच.वी.डी.सी बाईपोल लिंक।

(iii) पूर्वी क्षेत्र में ईब घाटी तथा उत्तरी क्षेत्र में जयपुर के मध्य 3000 मे. वा. एच.वी.डी.सी. बाईपोल लिंक तथा ईब घाटी (पूर्वी क्षेत्र) से राय पुर (पश्चिमी क्षेत्र) तक 400 के.वी.ए.सी. प्रणाली। यह पारेषण लिंक सी.ई.पी.ए. से संबंधित पारेषण का हिस्सा है।

अंतः क्षेत्रीय लिंको को चालू किए जाने के साथ ही एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विद्युत का अंतरण करना संभव हो जाएगा तथा इससे विद्युत उत्पादन को अधिकतम किया जा सकेगा।

पाकिस्तना से बिजली की खरीद

288. **श्री राम जेठमलानी**: क्या विद्युत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने पाकिस्तान से बिजली खरीदने के प्रस्ताव को अंतिम रूप से स्वीकृत दे दी है,

(ख) यदि हां, तो क्या इस खरीदी गई बिजली को भारत में लाने के लिए पारगम्यता व्यवस्था स्थापित करने के संबंध में पाकिस्तान के आर्थिक सहयोग पर कोई समझौता किए जाने की संभावना है, और

(ग) यदि हां, तो इस संबंध में तथ्य क्या है और इस उक्त पारगम्यता व्यवस्था पर कुल होने वाले व्यय का अनुमान क्या है?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा विद्युत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र कुमार भगतराम अलघ): (क) जी, नहीं।

(ख) और (ग) भारत को बिजली का निर्यात किये जाने के लिए पाकिस्तान सरकार से भारत सरकार को एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। इसके प्रत्युत्तर में सरकार ने पाकिस्तानी प्रस्ताव के प्रति अपनी रूचि व्यक्त की है और भारतीय प्रतिनिधि मण्डल पाकिस्तान को भेजन में अथवा पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल द्वारा भारत का दौरा, किए जाने में अपनी इच्छा व्यक्त की है ताकि दोनों देशों के बीच प्रस्ताव के तकनीकी एंव वाणिज्यिक पहलूओं पर व्यापक रूप से विचार विमर्श किया जा सके। पाकिस्तान के उत्तर की प्रतीक्षा है।

Private Investment in Power Distribution Sector

289. SHRI SATISH PRADHAN: Will the Minister of POWER be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to the news item published in the Business Standard dated 20th September, 1997 under the caption "Ceiling on profits may be raised-New policy to attract private sector in power distribution planned";

(b) if so, what is the reaction of Government to the observations made therein;